ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

नवाब कपूर सिंह जी का व्यक्तित्त्व

सिक्ख इतिहास, भाग-दूसरा

लेखक : स. जसबीर सिंह
क्रांतिकारी जगत गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Websie:www.sikhworld.info
or
Websie:www.sikhhistory.in

नोट : यहां दी गई सारी जानकारी लेखक के अपने निजी विचार हैं। यह जरूरी नहीं कि सभी लेखक के विचारों से सहमत हों।

नवाब कपूर सिंह जी का व्यक्तित्त्व

सरदार कपूर सिंह जी का जन्म सन् 1697 ईस्वी को चौधरी दलीप सिंह जी के घर, ग्राम कालोके, परगना शेखूपुरा में हुआ । चौधरी दलीप सिंह, सिक्ख धर्म के प्रति अटूट आस्था रखते थे । अत: उन्होंने अपने प्रिय पुत्र का पालन पोषण गुरू मर्यादा अनुसार किया । उन दिनों बंदा सिंह बहादुर की विजयों की घर घर चर्चा होती थी । अत: आप बाल्याकाल में ही सैनिक रूचियाँ रखने लगे । आप प्राय: किशोरों की टोलियां बनाकर युद्ध लड़ने के खेल खेला करते थे । जब आप युवावस्था में आये तो आपके माता - पिता ग्राम फैजलपुर में आ बसे । यह नगर अब्दुल समद खान के दामाद के नियन्त्रण में था । उसने सिक्खों से द्वेष के कारण अनेकों निर्दोषसिक्खों को मृत्युदण्ड दे दिया । कपूर सिंह किसी विधि द्वारा समय रहते वहाँ से कुछ युवकों के साथ अमृतसर पहुँचने में सफल हो गये । उन दिनों अमृतसर में तत्वा खालसा व तथाकथित बन्दई खालसा का आपसी मतभेद भाई मनी सिंह जी ने सुलझाया था । वहाँ उन दिनों खालसे की फिर से चढ़दी कला देखने में आ रही थी । अत: कपूर सिंह जी ने गुरूमति की शिक्षा ग्रहण करके कुछ अन्य उत्साहित युवकों के साथ अमृत धारण कर लिया और गुरदीक्षा लेकर पंथ के हितों की रक्षा हेतु जूझ मरने की शपथ ली । आप कभी समय नष्ट नहीं करते थे,

(सन 1697 से 1753 ई.) नवाब कपूर सिंह जी, जब मुग़ल शासकों ने सिक्खों से सन्धि करने के विचार से नवाबी की उपाधि का सम्मान भेजा तो यह पद् इस विनम्र सरदार को मिला।

(ਸਨ 1697 ਤੋਂ 1753 ਈ.) ਨਵਾਬ ਕਪੂਰ ਸਿੰਘ ਜੀ, ਜਦੋਂ ਮੁਗ਼ਲ ਹਕੂਮਤ ਨੇ ਮਜਬੂਰ ਹੋਕੇ ਸਿੱਖਾਂ ਨਾਲ ਸਮਝੌਤੇ ਦਾ ਹਾਰ ਚੁਣਿਆਂ ਤਾਂ ਨਵਾਬੀ ਦਾ ਖਿਤਾਬ ਭੇਜਆਂ ਤਾਂ ਇਸ ਵੀਨਮਰ ਬੰਦੇ ਨੂੰ ਇਹ ਉਪਾਦੀ ਮਿਲੀ।

सदैव लंगर इत्यादि के कार्यों में समर्पित भाव से सेवामें संलग्न रहते थे । आप मधुरभाषी थे । आपकी निष्काम सेवा से सभी प्रसन्न थे । अत: आप लोकप्रिय बनते ही चले गये । आप कोई भी श्वास व्यर्थ न जाने देते, सदैव चिंतन मनन में ही कार्यरत रहते, इसलिए आपके मुखमण्डल परएक तेजोमय आभा बनी रहती । आप धर्मवान, अभय तथा दूरदृष्टिवान थे । आप समय रहते उचित निर्णय लेने की क्षमता रखते थे । आपके नेतृत्त्व में खालसा पंथ में एकता बनी रही और लगभग 20 वर्षो तक आपने पंथ का विषम/विकट परिस्थितियों में मार्गदर्शन किया । आप शारीरिक दृष्टि से ऊँचे कठ वाले, चौड़ी छाती, सुडौल गठ्ठा हुआ बदन और चेहरा तेजोमय , कुल मिलाकर बहुमुखी प्रतिभावान व्यक्तित्त्व के स्वामी थे ।

अनिश्चित शान्तिकाल

समस्त सिक्ख जगद् मुगलों द्वारा की गई संधि को एक छल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं समझते थे किन्तु सभी इस समय का लाभ उठाना चाहते थे । अत: नवस्थापित नवाब कपूर सिंह जी ने सभी से विचार विमर्श करके अमृतसर में खालसे का सम्मलेन बुलाया । सभी दूर-दराज के क्षेत्रों में खालसे को एकत्रित होने का निमन्त्रण भेजा गया । सम्मेलन में यह निश्चित किया गया कि हम अपनी तरफ से पूर्णत: शान्ति बनाए रखने का प्रयास करेंगे और किसी प्रकार का उत्पात नहीं करेंगे । जब तक कि शत्रु पक्ष हम पर किसी प्रकार का अन्याय अथवा द्वेष नहीं करता । उस समय उत्साहित युवकों द्वारा अपने अपने क्षेत्रों में स्वयंमेव दलों का निर्माण किया हुआ था । जिनकी संख्या लगभग 85 थी । इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि सभी जत्थों का विलय एक समूह में किया जायेगा । इस विशाल समूह का नाम रखा गया दल खालसा । सभी जवानों ने दल खालसा का अंग बनना स्वीकार कर लिया । इस पर जवानों का कार्यक्षेत्र और व्यवस्था इत्यादि करने के लिए, दल खालसा के अध्यक्ष नवाब कपूर सिंह जी ने दल को दो प्रमुख भागों में बाँटने की घोषणा की, 40 वर्ष की आयु से अधिक के व्यक्तियों के लिए एक अलग से दल की स्थापना कर दी । इन लोगों को गुरूधामों की सेवा और सिक्खी प्रचार का कार्यक्षेत्र दिया गया और इस दल को नाम दिया गया 'बड़ढा दल' । यह प्रौढ़ावस्था वाले सिक्ख श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी का जमाना देख चुके थे । अत: वे गुरू मर्यादा इत्यादि से

भली भान्ति परिचित थे । युवकों को तरूण दल का नाम दिया गया और इनका कार्यक्षेत्र बढ़ाकर उसका बहुत विस्तार कर दिया गया । पहले वे केवल अपने अस्तित्व को बनाये रखने का ही संग्राम करते रहते थे परन्तु अब उन पर जिम्मेदारियां बहुत बढ़ गई थी । पहली बात उनको निष्काम और निस्वार्थ भाव से परहित के लिए दुष्टों से जूझना था । दूसरा दीन-दुखियों की सेवाभाव से सहायता हेतु सत्ताधारियों पर अंकुश रखना था, जिससे सिक्खी और उसके सदाचार का गौरव बढ़े । शान्तिकाल में तरूण दल की संख्या दिनो-दिन बढ़ती ही चली गई । अत: लंगर इत्यादि व्यवस्था में कई बार बाधा उत्पन्न होने लगी, इसलिए दल खालसा के अध्यक्ष महोदय सरदार कपूर सिंह जी ने दल को पाँच भागों में विभक्त कर दिया । इनके रहने और प्रशिक्षण स्थल भी अलग अलग निश्चित कर दिये गये । पहले दल के नेता सरदार दीप सिंह, दूसरे दल के नेता प्रेम सिंह और धनी सिंह जी, तीसरे दल के नेता काहन सिंह और विनोद सिंह जी, चौथे दल के नेता सोंधा सिंह जी और पाँचवे दल के नेता वीर सिंह और अमर सिंह जी थे । इन पाँचों दल को अमृतसर के विभिन्न क्षेत्र में क्रमश: रामसर, विवेकसर, संतोखसर, लक्ष्मणसर और कौलसर में नवीन छावनियाँ बनाकर तैनात कर दिया गया । इन पाँचों जत्थों में से प्रत्येक जत्थे के पास तेरह सौ से दो हजार तक जवान हर समय तैयार रहने लगे । यह सभी जवान आपस में मिलजुल कर रहते और आने वाले कठिन समय के लिएसमय रहते प्रशिक्षण प्राप्त करते थे । इन सभी दलों का नेतृत्त्व (कमांड) नवाब कपूर सिंह के हाथ में था, जिनका सभी सिक्ख बहुत आदर करते थे । इन जवानों का खर्च जक्रियाखान द्वारा दी गई जागीर से चल रहा था । इस प्रकार सभी जवानों पर नियमित सैनिक अनुशासन की नियमावली लागू कर दी गई ।

जैसे ही पँजाब के राजयपाल जक्रियाखान को सिक्खों की बढ़ती हुई शक्ति की सूचना मिली तो वह व्याकुल हो गया । वास्तव में तो वह चाहता था कि सिक्ख लोभ और ऐश्वर्य के जीवन जीने के चक्र में लड़ने-मरने का कठोर जीवन त्याग दें और धीरे धीरे उनकी स्वाभिमानी विचारधारा का पतन हो जाये, जिससे मुगल उन पर निरंकुश शासन कर सके, परन्तु हुआ बिल्कुल उलट । सिक्ख और संगठित हो गये और उन्होंने अपनी बिखरी हुई शक्ति को एकता के सूत्र में बांध लिया । सिक्खों की एकता और उनका नियमित सैनिक प्रशिक्षण, वास्तव में सत्ताधारियों के लिए खतरे की घंटी था । अत: प्रशासन को अपनी पुरानी नीति पर पुन: विचार

करने की आवश्यकता पड़ गई । अन्त में प्रशासन ने खालसे नवाबी तथा जागीर वापस लेने का निर्णय कर लिया ।

सन् 1735 ईस्वी की गर्मियों की ऋतु में एक दिन अकस्मात् मुगल सेना ने सिक्खों को दी गई जागीर पर आक्रमण कर दिया और उसे जब्त करने की घोषणा कर दी । इसकी प्रतिक्रिया में दल खालसा ने स्वतन्त्रता संग्राम की घोषणा करके उत्तर दिया । इस समय उनके पाँचों तरूण दलों की लगभग 12,000 संख्या थी, जो हर दृष्टि से पंथ के हितों पर मन मिटने के लिए तैयार थे । दल खालसा के अध्यक्ष नवाब कपूर सिंह जी ने अपने जवानों को सम्बोधन करते हुए कहा - अब समय आ गया है, हमें इस छोटी सी जागीर पर सन्तुष्ट न होकर विशाल साम्राज्य की स्थापना का प्रयास करना है । यही वरदान हमें हमारे गुरूदेव जी ने दिया था कि खालसा कभी परतन्त्र नहीं रहेगा । वे स्वयं अपने भाग्य निर्माता होंगे ।

समाप्त